रघुवीर सहाय, आधुनिक कविता की अभिजात्य संस्कार, प्रामाणिक गाम्भीर्य तथा भावात्मक उदात्तता से विद्रोह किया है और भाषा, परिस्थिति तथा संवेदन के सामान्य स्तर को काव्य की विशिष्ट अभिव्यक्ति के रूप में व्यंजित किया है। एक ओर कवि ने साधारण बोलचाल की भाषा के मुहावरे, लहजों, वाक्यांशों, शब्दों, बिम्बों तथा प्रतीकों को सारे वातावरण के साथ यहाँ तक कि भद्देपन के साथ अपने काव्य-उपकरणों के रूप में ग्रहण किया है और दूसरी ओर अपने युग-जीवन की साधारण, अतिपरिचित, सामाजिक तथा पारिवारिक (मध्यवर्ग) परिस्थितियों मनःस्थितियों और संघर्षों को व्यंजित करने का प्रयत्न किया है। और जिस प्रकार भाषा-शैली को वह काव्य-बोध के स्तर तक उठाने में सफल हुआ है, उसी प्रकार सामान्य संवेदनाओं और अनुभवों को असामान्य भावस्थितियों के रूप में व्यंजित भी कर चुका है। रघुवीर सहाय अपनी इसी भाषा-शैली में और अगम्भीर लगनेवाले ढंग से आत्माभिव्यक्ति जैसी गहरी सर्जना की समस्या को व्यंजित करने में भी सफल होते हैं। आज के जीवन की विषमताओं, कुण्ठाओं, विकृतियों तथा असंगतियों को कवि ने बहुत साधारण सामाजिक तथा पारिवारिक स्तर पर मध्यवर्ग की तंगियों, कठिनाइयों तथा विवशताओं के रूप में देखा और अनुभव किया है। इस प्रकार उसकी अभिव्यक्ति में भावावेग, अतिरंजना के आकर्षण तथा गम्भीरता के स्थान पर सहज आत्मीयता और निकट की अनुभूति व्यंजित हुई है।

रघुवीर सहाय यथार्थ और अनुभूति के प्रति अकृत्रिम जिज्ञासा से आकर्षित हैं, पर उसमें रोमाण्टिक भावुक आकर्षण के स्थान पर तटस्थ अनुभव की मनःस्थिति मात्र व्यंजित होती है।

आधुनिक काव्य आत्मचेतना और वैयक्तिक उपलब्धियों का काव्य है। उसका कवि आत्मचेता कलाकार है। इस दृष्टि से यह भी कहा गया है आधुनिकता महान काव्य या कला की भूमि नहीं है, क्योंकि महानता का सम्बन्ध प्रतिभा की अचेतन

Scanned with CamScanner

शमशेर बहादुर सिंह की स्थिति इस काव्यांदोलन के सन्दर्भ में विशिष्ट है। नकेनवादियों का जितना आग्रह है कि उनको 'वादी' के रूप में जाना जाय, शमशेर उतना ही 'वादों' से अलग रहना चाहते हैं — "मेरे कवि ने कभी किसी 'फार्म', शैली, विषय का सीमा-बन्धन स्वीकार नहीं किया। फैशन किन विषयों पर लिखने का है, कौन-सी शैली चल रही है, किस 'वाद' का युग आ गया है या चल रहा है, मैंने कभी इसकी परवाह नहीं की।" इसके दो मूल कारण हैं। एक तो उनके व्यक्तित्व में उर्दू शायरी (विशेषकर गजल), छायावादी रोमैण्टिक भावना और यूरोप के प्रतीकवाद से लेकर सुर्रियलिस्ट तक के प्रभाव एक साथ विचित्र संयोग उपस्थित करते हैं, दूसरे रोमैण्टिक व्यक्तिवाद तथा मार्क्सवादी समाज की द्विविधा सदा उनमें ऐन्द्रजालिक आकर्षण उत्पन्न करती है। इस अपनी रोमानी प्रकृति और बौद्धिक आरोप के तनाव को संकल्पित रूप में दूर करने के बजाय शमशेर उनके संयोग से प्रभावात्मक वातावरण की सृष्टि करते हैं। यह अवश्य है कि आधुनिक कवियों में अधिकांश में रोमैण्टिक चेतना और तत्व पाये जाते हैं, उनमें यथार्थ-बोध युग-सम्पृक्ति का सार्थक रूप में अनुभव (भोग) करने का आग्रह है। परन्तु शमशेर में यथार्थ-स्थिति की चेतना